ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 402-404
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

हिन्दी साहित्य मे 'नारी' शब्द के विभिन्न अर्थ

निधि श्रीवास्तव
शोध अध्येत्री– हिन्दी विभाग, नई बाजार, बक्सर (बिहार), भारत

Received- 21.07.2020, Revised- 23.07.2020, Accepted - 25.07.2020 E-mail: - amitsonal83@gmail.com

सारांश : *नारी के विभिन्न रूपों को व्यक्त करने के लिए 'नारी' अर्थ के बोधक विभिन्न शब्द सभ्यता, समाज और संस्कृति के विकास के साथ ही प्रचलित रहे हैं। नारी के लिए विश्व की विभिन्न भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले शब्द नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हैं।*

कुंजीभूत शब्द– व्यक्त, बोधक, सभ्यता, समाज, संस्कृति, विकास, प्रचलित, भाषाओं, दृष्टिकोण, स्पष्ट , योषित।

अमरकोशकार के अनुसार, नारी के पर्यायवाची शब्द निम्न हैं– वामा, कांता, अबला, वधू, स्त्री, योषित, जोषा, ललना, महिला, वनिता, चंडी, नितंबिनी, सीमांतिनी, रमा, योषा, भामिनी, महिषी, सुन्दरी, रमणी, प्रतीपदर्शिनी, कोपना, मतकाशिनी, सहधर्मिणी, भार्या, पुरंधी, अध्यूढ़ा, वरवर्णिनी, कुटंबिनी, भोगिनी, पत्नी, स्वयंवरा, कुलपालिका, पर्तिवरा, अधिविन्ना।''

परिवार की सूत्रधारक होने से नारी 'स्त्री' कहलाती है। सेवा करने अथवा सेवा का साधन होने के कारण उसे योषा अथवा योषित कहा जाता हैं। प्रेम और सेवा भाव पाया जाने के कारण उसे जोषा कहते हैं। शारीरिक बल कम होने के कारण नारी को अबला कहा गया है। वह केश–विन्यास करती है इसतिए उसे सीमांतिनी। वधू इसलिए कहलाती है क्योंकि वह वहन करने वाली तथा विवाह–योग्य होती है। उसकी विपरीत दृष्टि होने के कारण उसे प्रतीपदर्शिनी कहा जाता है। स्नेह का वमन करने वाली होने के कारण वामा, नारी राग से युक्त होने के कारण वनिता कहलाती है। सुंदर अंगों वाली होने से वह अंगना, भयशील होने के कारण भीरु, उसमें कामभावना अधिक होने से कामिनी अथवा पुरुष द्वारा उसकी कामना करने के कारण वह कामिनी कहलाई।

दृष्टि में काम की अधिकता होने से प्रमदा, मान करने वाली होने के कारण मानिनी, सुंदरी इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह लावण्य और सौन्दर्ययुक्त होती है। वह रमण कराती है इसलिए रमणी अथवा रमा, क्रोध करने वाली होने से कोपना, भामा, भामिनी अथवा चंडी कहलाती है। चाह करने योग्य होने के कारण कांता, चंचल प्रकृति की होने से ललना, पुरुष का साथ देने के कारण पत्नी, अर्धांगिनी अथवा सहधर्मिणी कही जाती है। जिसका भरण–पोषण किया जाता है वह भार्या, नितंब बड़े होने के कारण नितंबिनी। वह कुल का पालन करती है, इसलिए कुलपालिका, कुटुंबिनी। स्वंय का पति चुनने वाली स्वयंवरा, माता के रूप में पूजनीय होने से महिषी, पति का सम्मान करने के कारण महिला कहा जाता है। युवा भावनाओं से सम्पन्न होने से युवती, पुरुष द्वारा उसका सम्मान उसे मेना भी कहा जाता है। सुंदरता से पूर्ण होने के कारण श्यामा कहते हैं। घर का आधार होने के कारण गृहिणी कहते हैं। कोयल के समान मधुर आवाज की होने के कारण उसे सारंग कहा जाता है। प्राचीन आर्य समाज में इन्हें 'जानि' कहा जाता है, जिसका अर्थ है जन्म देने वाली। आगे चलकर उसे ही बदलकर जननी शब्द बना दिया गया। महिला शब्द मह+इल+आ से बना है। 'मह' का अर्थ श्रेष्ठ या पूज्य है। पूज्य, श्रेष्ठ जो है वही महिला है। लौकिक संस्कृति में आदर देने के लिए स्त्रियों के लिए 'मान्या' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

''नारी'' शब्द संस्कृत के नारीझप्रपणणारी, णायर झअपभ्रश णारि झहिन्दी नारि,'[1] इसी प्रकार संस्कृत साहित्य में 'नारी शब्द का अर्थ है–'नु नरस्य वा धर्म्या।'' नारी शब्द संस्कृत के 'न' धातु से बना है(नृ+अञ–ङीन्)।[2] नारी शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से लेकर आज तक 'मादा' के अर्थ में होता रहा है, लेकिन आधुनिक काल में इस शब्द का प्रयोग 'स्त्री' अथवा 'महिला' 'मानवी' आदि अर्थ में प्रयुक्त होने लगा।

नारी के लिए स्त्री, महिला आदि शब्दों का प्रयोग मराठी में होता है, जो शब्द संस्कृत से आए हैं और यह हिन्दी में भी प्रयुक्त होते हैं। नारी के लिए 'हे गसु' शब्द का प्रयोग कन्नड़ में किया जाता है, जिसका अर्थ महिला, पतिव्रता, गरती आदि होता है।

अंग्रेजी भाषा में नारी के लिए श्रूवउमदश शब्द का प्रयोग होता है। यह अंग्लो सेक्सन भाषा से आया शब्द है। एक दूसरा शब्द श्संकलश भी नारी के लिए प्रयुक्त होता है। पहले यह शब्द 'Hiaefdige' के रूप में प्रयुक्त होता

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

था (Half-bread अर्थात् रोटी और 'digekneader' अर्थात् आटा गूंथनेवाली या रांधनेवाली) इसी के योग से श्संकलश शब्द आधुनिक काल में प्रचलित हुआ। आज आदरणीय शब्द के अर्थ में श्संकलश शब्द का अर्थ लिया जाता है। मूलतः नारी पुरुष के लिए रोटी बनाने वाली ही रही है।

मानक हिन्दी कोश के अनुसार–'विशेषतः वह स्त्री, जिसमें लज्जा, सेवा, श्रद्धा, त्याग आदि गुणों की प्रधानता हो, नारी है।'' मनोवैज्ञानिक अर्थ में कार्नहार्नी के अनुसार–'' स्त्री मनोचिकित्सक और मनोवैज्ञानिक शारीरिक भिन्नता को ही स्त्री और पुरुष की अलग–अलग मानसिक स्थितियों के द्योतक मानते हैं।'' वैज्ञानिक अर्थ में '' मानवों में स्त्री–जनन इकाई को जीवाणु और पुरुष–जनन इकाई को शुक्राणु कहते हैं। शुक्राणु जब स्त्री जीवाणु के साथ मिलता है, तो मिलकर भ्रूण बनने की यह प्रक्रिया स्त्री देह के युट्रस नामक एक भाग से शुरु होती है और भ्रूण–स्थिति मानव–शिशु का शारीरिक निर्माण भी वहीं होता है। भ्रूण–स्थिति शिशु के पोषण के लिए आहार भी स्त्री–देह से ही प्राप्त होता है।'' ''स्त्री और पुरुष में मुख्य अन्तर 'हारमोन्स' को लेकर है। हारमोन्स के कारण ही दोनों में भिन्नता नजर आती है। हारमोन्स की भूमिका ने स्त्री को पुरुष से बिल्कुल भिन्न मानसिकता प्रदान की। 'शारीरिक संरचना में भी हारमोन्स की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता।'' ये सभी नाम नारी के मोहककारी आकर्षक तत्व को चिन्हित करते हैं। इनका मानव–मन की रागात्मक चेतना से सीधा सम्बन्ध है। नारी सदा ही मानव के राग–जगत् में सर्वत्र उच्चतम स्थान की अधिकारिणी है। नारी के लिए प्रचलित विभिन्न शब्द पुरुषों द्वारा ही प्रयुक्त किए जाते रहे हैं। नारी का जो रुप जिस समय पसन्द आया, उस समय उसने नारी को उसी अलग नाम से संबोधित किया।

नारी मानव के जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके बिना मनुष्य का जीवन कभी भी सम्पूर्ण नहीं कहा जा सकता। नारी और पुरुष के दृढ़ परस्पर सम्बन्ध की अटूट श्रृंखला सृष्टि के प्रारम्भ से ही चली आ रही है। नारी और पुरुष की परस्पर पूरकता का बड़ा ही सुन्दर वर्णन' विष्णु पुराण' में मिलता है–'' पुरुष हठ है, स्त्री इच्छा। पुरुष दया है स्त्री दान। पुरुष मंत्र है, स्त्री उदाहरण। पुरुष अग्नि है, स्त्री ईंधन। पुरुष सूर्य है, स्त्री आभा। पुरुष विस्तार, स्त्री सीमा। पुरुष समुद्र है, स्त्री किनारा। पुरुष धनी है, स्त्री धन। पुरुष युद्ध है, स्त्री शक्ति। पुरुष दीपक है, स्त्री प्रकाश। पुरुष दिन है, स्त्री रात्रि। पुरुष वृक्ष है, स्त्री फल। पुरुष संगीत है, स्त्री स्वर। पुरुष न्याय है, स्त्री सत्य। पुरुष सागर है, स्त्री नदी। पुरुष स्तम्भ है, स्त्री पताका। पुरुष शक्ति है, स्त्री सौन्दर्य। पुरुष आत्मा है, स्त्री शरीर।''

प्राचीनकाल से ही नारी की महत्ता का प्रतिपादन होता रहा है। नारी मनुष्य जाति का जीवन सुन्दर एवं सम्पन्न अपनी विविध भूमिकाओं द्वारा बनाती रही है। ''नारी की पवित्रता, आधारनिष्ठा, कोमलयुक्त दृढ़ता, व्यवहार प्रियता तथा त्यागपूर्ण सेवा ने हमारी आदिम संस्कृति को जन्म दिया है। इस पुण्यभूमि की संस्कृति का केन्द्र नारी ही रही है।'' नारी की महत्ता का संकेत देवताओं के नाम द्वारा भी होता है– जैसे–सीता–राम, लक्ष्मी–विष्णु, राधा–कृष्ण। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक धर्म व संस्कृति के तत्वों को पहुँचाने का कार्य नारी द्वारा ही किया जाता है। परिवार परिकल्पना ही भारतीय जीवन–पद्धति की समग्र गरिमा और अर्थवत्ता की आधार–भित्ति है। नारी के बिना परिवार की सार्थकता ही संदिग्ध है। महर्षि मनु ने घोषणा की थी कि देवता वहाँ रमण करते हैं, जहाँ नारियों की पूजा होती है। भारतीय मनीषियों ने नारी के बिना जीवन का कोई भी कर्म निरर्थक माना है। नारी प्राचीन काल से ही चिंतन का विषय किसी ना किसी रुप में रही है। नारी से संबंधित अनेक प्रकार की धारणाएँ समाज और संस्कृति में प्रचलित रही है, इसलिए उसे विभिन्न रूपों में देखा गया है। एक और देवी रूप में नारी की पूजा की जाती है, तो दूसरी और उसे पाप की खान और केवल भोग–विलास का साधन माना गया है। नारी संबंधी सभी प्रकार की अवधारणाएँ जो प्राचीन काल से लेकर आज तक की गई हैं, पुरुष द्वारा ही निर्मित है। डॉ. शीला रजवार के अनुसार–''परम्परागत मानसिकता ने नारी को देवी और दानवी दो छोरों में बांट दिया है। कहीं उसे देवी गुणों से पुष्ट मान देवी कहकर पूजा की है। और कहीं राक्षसी गुणों को लिखकर दानवी कहकर भत्सर्ना की है, किन्तु वास्तविकता यह है कि न तो वह देवी है न दानवी। वह मानवी है उसमें दया, माया, ममता, विश्वास है, वह क्रूर कठोर भी है। वह प्यार करना भी जानती है तो घृणा करना भी। कलह भी तो सुलह भी जानती है, वह मानव–धर्मिणी मानवी है।''

''स्मृति ग्रंथों में भी नारी को पूर्ण सम्मान प्राप्त था। पुराणों, महाकाव्यों में भी स्त्री सम्माननीय तो थी, परन्तु आनन्द की पवित्र विभूति और सुख की अजस्त्र स्त्रोत नारी जो ऋग्वैदिक जीवन के लक्ष्य में अपनी महत्ता के शीर्ष पर आसीन थी, एक सीढ़ी नीचे उतर आई। इस नवोदित मनोवृति के अनुसार वह लक्ष्य प्राप्ति में सहयोगिनी नहीं वरन् बाधा समझी जाने लगी।'' परिवार कल्पना के कारण भारतीय संस्कृति की महत्ता, श्रेष्ठता है। परिवार की कल्पना साकार करने में स्त्री का अत्यधिक योगदान है। स्त्री ही स्नेहपूर्ण गृहस्थी का आधार है। ''पुरुष का जीवन संघर्ष से आरम्भ होता है और स्त्री का आत्मसमर्पण से। जीवन के

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

कठोर संघर्ष में जो पुरुष विजयी प्रमाणित हुआ, उसे स्त्री ने कोमल हाथों से जयमाला देकर स्निग्ध चितवन से अभिनन्दित करके और स्नेह–प्रवण आत्मनिवेदन से अपन निकट पराजित बना डाला।"[3] नारी का संतुलित व्यक्तित्व ही मानव जीवन में सुख एवं आनन्द ला सकता है। जैसे कि जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' में कहते हैं–

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।"

उक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि नारी का मानव जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान है। "नारी के बिना पुरुष का जीवन पंगु है। नारी ही पुरुष के जीवन में सत्यं शिवं सुन्दरम् की स्थापना करती है। 'कन्या' होकर वह मानव के सत्यम को, पत्नी बनकर उसके सुन्दरम् को तथा माता बनकर उसके 'शिवम्' को एक रूप प्रदान करती है।" नारी का अध्ययन विभिन्न रूपों में किया गया है कभी वह पत्नी होती है तो कभी माँ तो कभी बेटी। अथर्ववेद के अनुसार "जिस प्रकार प्रकृति जगत की कत्री है, उसी प्रकार पत्नी घर की निर्मात्री है।" "पत्नी ही घर है, जिस घर में पत्नी नहीं, वह घर नहीं है धर्म, अर्थ और काम में, देश में और परदेश में, सुख में, दुख में, हर बात में पत्नी ही साथी है।"

"ऋग्वैदिक ऋषियों ने प्राकृतिक तत्त्वों और देवों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करने में उन्हें माता के रूप में कल्पित किया है।"

पुरुष ने नारी के वर्गीकरण के फलस्वरूप उसे दवी और दानवी तक भी कहा और जब यह वर्गीकरण उसे संवुष्ट न कर पाया, तो नारी को एक पहेली कह दिया। नारी के मानवीय रूप की और प्राचीन काल से लेकर आज तक कम ही ध्यान दिया गया है, जिसके कारण नारी का मानवी पक्ष अबल होता चला गया और वह पुरुष के भेग की वस्तु बनकर रह गई। मनुष्य जाति के इतिहास में किसी भी कालखण्ड को उठाकर देखते हैं, तो हम पाते हैं कि यहाँ कभी भी किसी भी प्रकार की रचनाएँ रचित हुई हैं, नारी सदा ही उनके आधार में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में विघमान रही है, यह बात और है कि वह पुरुषों के हाथ की कठपुतली से भिन्न कुछ नहीं रही। नारी की अपनी कोई पहचान नहीं थी, जबकि वह मानव जाति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। मानव का नारी के साथ शारीरिक, रागात्मक और धार्मिक संबंध होने के कारण भी नारी के विभिन्न स्वरूप निर्धारित किए गए हैं।

नारी कपोल कल्पना नहीं, एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व है। समाज का एक महत्वपूर्ण भाग है नारी। वह समाज का एक भाग होकर एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व भी है। वह जीवन शक्ति से परिपूर्ण है। उसे परंपरागत मूल्यों के संदर्भ में देखना अधिक उचित है।

नारी का स्वतन्त्र रूप नए मूल्यों एंव नए संदर्भों के आधार पर दिखाई देता है। अपने जैविक रूप द्वारा उसे शारीरिक रूप में पुरुष से अलग एक स्वतन्त्र रूप की प्राप्ति होती है तो अपने मानवीय रूप द्वारा वह महान व्यक्तित्व प्राप्त करती है। इन तीनों के समन्वय से ही नारी नारीत्व के शिखर पर पहुँचती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, उद्धरण– कोश, 465.
2. डॉ. गजानन शर्माः प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी, पृ 42.
3. अमरकोश – द्वितीय खंड, मनुष्य वर्ग।
4. डॉ. नरेश कुमार, हिन्दी व्युत्पत्ति– कोश, पृ 178.
5. द्वारका प्रसाद शर्मा व झा, 'संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ्य, पृ. 559.
6. ऑन आउट लाइन हिस्ट्री ऑफ इंग्लिश लैंग्वेजः ई.एल.वुड।
7. विष्णु पुराण, डा. सरोजिनी, बाबर, स्त्री शिक्षणाची वाहचाल, 1968, पृ 79.
8. डॉ. वल्लभदास तिवारी, ' हिन्दी काव्य में नारी', 1974, आमुख (ख)।

*****